

# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

## OVERVIEW

**We have seen that the end of Cold War left the US without any serious rival in the world. The era since then has been described as a period of US dominance or a unipolar world. In this chapter, we try to understand the nature, extent and limits of this dominance. We begin by narrating the story of the rise of the new world order from the First Gulf War to the US-led invasion of Iraq. We then pause to understand the nature of US domination with the help of the concept of 'hegemony'. After exploring the political, economic and cultural aspects of US hegemony, we assess India's policy options in dealing with the US. Finally, we turn to see if there are challenges to this hegemony and whether it can be overcome.**

## परिचय

हमने देखा कि शीतयुद्ध के अंत के बाद संयुक्त राज्य अमरीका विश्व की सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरा और दुनिया में कोई उसकी टक्कर का प्रतिद्वंद्वी न रहा। इस घटना के बाद के दौर को अमरीकी प्रभुत्व या एकध्रुवीय विश्व का दौर कहा जाता है। इस अध्याय में हम अमरीकी प्रभुत्व की प्रकृति, विस्तार और सीमाओं को समझने की कोशिश करेंगे। पहले खाड़ी युद्ध से लेकर अमरीकी अगुआई में इराक पर हमले तक घटनाओं का एक सिलसिला है। एकध्रुवीय विश्व के उभार की इस कथा की शुरुआत हम इस घटनाक्रम के जिक्र से करेंगे। इसके बाद हम थोड़ा ठहरकर 'वर्चस्व' की अवधारणा के सहारे इस प्रभुत्व की प्रकृति को समझने के प्रयास करेंगे। अमरीकी वर्चस्व के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पहलुओं की जाँच-परख के बाद हम यह देखेंगे कि अमरीका से निबटने के लिए भारत के पास नीतिगत विकल्प क्या हैं। अध्याय के अंत में हम इस बात पर विचार करेंगे कि अमरीकी वर्चस्व के सामने क्या कोई चुनौती आन खड़ी है और क्या अमरीकी वर्चस्व से उबरा जा सकता है?

# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

## BEGINNING OF THE 'NEW WORLD ORDER'

**The sudden collapse of the Soviet Union took everyone by surprise. While one of the two superpowers ceased to exist, the other remained with all its powers intact, even enhanced. Thus, it would appear that the US hegemony began in 1991 after Soviet power disappeared from the international scene. This is largely correct, but we need to keep in mind two riders to this.**

नयी विश्व-व्यवस्था की शुरुआत सोवियत संघ के अचानक विघटन से हर कोई आश्चर्यचकित रह गया। दो महाशक्तियों में अब एक का वजूद तक न था जबकि दूसरा अपनी पूरी ताकत या कहें कि बढ़ी हुई ताकत के साथ कायम था। इस तरह, जान पड़ता है कि अमरीका के वर्चस्व की शुरुआत 1991 में हुई जब एक ताकत के रूप में सोवियत संघ अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य से गायब हो गया। एक हद तक यह बात सही है लेकिन हमें इसके साथ-साथ दो और बातों का ध्यान रखना होगा।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**First, as we shall see in this chapter, some aspects of US hegemony did not emerge in 1991 but in fact go back to the end of the Second World War in 1945. Second, the US did not start behaving like a hegemonic power right from 1991; it became clear much later that the world was in fact living in a period of hegemony. Let us therefore look at this process by which US hegemony got established more closely.**

पहली बात यह कि अमरीकी वर्चस्व के कुछ पहलुओं का इतिहास 1991 तक सीमित नहीं है बल्कि इससे कहीं पीछे दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के समय 1945 तक जाता है। इस पहलू के बारे में हम इसी अध्याय में पढ़ेंगे। दूसरी बात, अमरीका ने 1991 से ही वर्चस्वकारी ताकत की तरह बरताव करना नहीं शुरू किया। दरअसल यह बात ही बहुत बाद में जाकर साफ हुई कि दुनिया वर्चस्व के दौर में जी रही है। आइए, हम उस प्रक्रिया की चर्चा करें जिसने अमरीकी वर्चस्व की जड़ों को ज्यादा गहरे तक जमा दिया।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**In August 1990, Iraq invaded Kuwait, rapidly occupying and subsequently annexing it. After a series of diplomatic attempts failed at convincing Iraq to quit its aggression, the United Nations mandated the liberation of Kuwait by force. For the UN, this was a dramatic decision after years of deadlock during the Cold War. The US President George H.W. Bush hailed the emergence of a 'new world order'**

1990 के अगस्त में इराक ने कुवैत पर हमला किया और बड़ी तेजी से उस पर कब्ज़ा जमा लिया। इराक को समझाने-बुझाने की तमाम राजनयिक कोशिशें जब नाकाम रहीं तो संयुक्त राष्ट्रसंघ ने कुवैत को मुक्त कराने के लिए बल-प्रयोग की अनुमति दे दी। शीतयुद्ध के दौरान ज्यादातर मामलों में चुप्पी साध लेने वाले संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिहाज से यह एक नाटकीय फैसला था। अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने इसे 'नई विश्व व्यवस्था' की संज्ञा दी।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**A massive coalition force of 660,000 troops from 34 countries fought against Iraq and defeated it in what came to be known as the First Gulf War. However, the UN operation, which was called 'Operation Desert Storm', was overwhelmingly American. An American general, Norman Schwarzkopf, led the UN coalition and nearly 75 per cent of the coalition forces were from the US. Although the Iraqi President, Saddam Hussein, had promised "the mother of all battles", the Iraqi forces were quickly defeated and forced to withdraw from**

34 देशों की मिलीजुली और 660000 सैनिकों की भारी-भरकम फौज ने इराक के विरुद्ध मोर्चा खोला और उसे परास्त कर दिया। इसे प्रथम खाड़ी युद्ध कहा जाता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के इस सैन्य अभियान को 'ऑपरेशन डेजर्ट स्टार्म' कहा जाता है जो एक हद तक अमरीकी सैन्य अभियान ही था। एक अमरीकी जनरल नार्मन श्वार्जकॉफ इस सैन्य-अभियान के प्रमुख थे और 34 देशों की इस मिली जुली सेना में 75 प्रतिशत सैनिक अमरीका के ही थे। हालाँकि इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन का एलान था कि यह 'सौ जंगों की एक जंग' साबित होगा लेकिन इराकी सेना जल्दी ही हार गई और उसे कुवैत से हटने पर मजबूर होना पड़ा।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**The First Gulf War revealed the vast technological gap that had opened up between the US military capability and that of other states. The highly publicised use of so-called 'smart bombs' by the US led some observers to call this a 'computer war'. Widespread television coverage also made it a 'video game war', with viewers around the world watching the destruction of Iraqi forces live on TV in the comfort of their living rooms.**

प्रथम खाड़ी-युद्ध से यह बात ज़ाहिर हो गई कि बाकी देश सैन्य-क्षमता के मामले में अमरीका से बहुत पीछे हैं और इस मामले में प्रौद्योगिकी के धरातल पर अमरीका बहुत आगे निकल गया है। बड़े विज्ञापनी अंदाज में अमरीका ने इस युद्ध में तथाकथित 'स्मार्ट बमों' का प्रयोग किया। इसके चलते कुछ पर्यवेक्षकों ने इसे 'कंप्यूटर युद्ध' की संज्ञा दी। इस युद्ध की टेलीविजन पर व्यापक कवरेज हुई और यह एक 'वीडियो गेम वार' में तब्दील हो गया। दुनियाभर में अलग – अलग जगहों पर दर्शक अपनी बैठक में बड़े इत्मीनान से देख रहे थे कि इराकी सेना किस तरह धराशायी हो रही है।

## THE CLINTON YEARS

**Despite winning the First Gulf War, George H.W. Bush lost the US presidential elections of 1992 to William Jefferson (Bill) Clinton of the Democratic Party, who had campaigned on domestic rather than foreign policy issues. Bill Clinton won again in 1996 and thus remained the president of the US for eight years.**

## क्लिंग्टन का दौर

प्रथम खाड़ी युद्ध जीतने के बावजूद जार्ज बुश 1992 में डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार विलियम जेफर्सन (बिल) क्लिंग्टन से राष्ट्रपति-पद का चुनाव हार गए। क्लिंग्टन ने विदेश-नीति की जगह घरेलू नीति को अपने चुनाव-प्रचार का निशाना बनाया था। बिल क्लिंग्टन 1996 में दुबारा चुनाव जीते और इस तरह वे आठ सालों तक राष्ट्रपति-पद पर रहे।



# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**During the Clinton years, it often seemed that the US had withdrawn into its internal affairs and was not fully engaged in world politics. In foreign policy, the Clinton government tended to focus on 'soft issues' like democracy promotion, climate change and world trade rather than on the 'hard politics' of military power and security.**

क्लिंटन के दौर में ऐसा जान पड़ता था कि अमरीका ने अपने को घरेलू मामलों तक सीमित कर लिया है और विश्व के मामलों में उसकी भरपूर संलग्नता नहीं रही। विदेश नीति के मामले में क्लिंटन सरकार ने सैन्य-शक्ति और सुरक्षा जैसी 'कठोर राजनीति' की जगह लोकतंत्र के बढ़ावे, जलवायु-परिवर्तन तथा विश्व व्यापार जैसे 'नरम मुद्दों' पर ध्यान केंद्रित किया।



**Nevertheless, the US on occasion did show its readiness to use military power even during the Clinton years. The most important episode occurred in 1999, in response to Yugoslavian actions against the predominantly Albanian population in the province of Kosovo. The air forces of the NATO countries, led by the US, bombarded targets around Yugoslavia for well over two months, forcing the downfall of the government of Slobodan Milosevic and the stationing of a NATO force in Kosovo.**

बहरहाल, क्लिंटन के दौर में भी अमरीका जब-तब फौजी ताकत के इस्तेमाल के लिए तैयार दिखा। इस तरह की एक बड़ी घटना 1999 में हुई। अपने प्रांत कोसोवो में यगोस्लाविया ने अल्बानियाई लोगों के आंदोलन को कुचलने के लिए सैन्य कार्रवाई की। कोसोवो में अल्बानियाई लोगों की बहुलता है। इसके जवाब में अमरीकी नेतृत्व में नाटो के देशों ने यगोस्लावियाई क्षेत्रों पर दो महीने तक बमबारी की। स्लोबदान मिलोसेविच की सरकार गिर गयी और कोसोवो पर नाटो की सेना काबिज हो गई।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Another significant US military action during the Clinton years was in response to the bombing of the US embassies in Nairobi, Kenya and Dar-es-Salaam, Tanzania in 1998. These bombings were attributed to Al-Qaeda, a terrorist organisation strongly influenced by extremist Islamist ideas. Within a few days of this bombing, President Clinton ordered Operation Infinite Reach, a series of cruise missile strikes on Al-Qaeda terrorist targets in Sudan and Afghanistan.**

क्लिंग्टन के दौर में दूसरी बड़ी सैन्य कार्रवाई नैरोबी (केन्या) और दारे-सलाम (तंजानिया) के अमरीकी दूतावासों पर बमबारी के ज़वाब में 1998 हुई। अतिवादी इस्लामी विचारों से प्रभावित आतंकवादी संगठन 'अल-कायदा' को इस बमबारी का जिम्मेवार ठहराया गया। इस बमबारी के कुछ दिनों के अंदर राष्ट्रपति क्लिंग्टन ने 'ऑपरेशन इनफाइनाइट रीच' का आदेश दिया। इस अभियान के अंतर्गत अमरीका ने सूडान और अफ़गानिस्तान के अल-कायदा के ठिकानों पर कई बार क्रूज मिसाइल से हमले किए।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**The US did not bother about the UN sanction or provisions of international law in this regard. It was alleged that some of the targets were civilian facilities unconnected to terrorism. In retrospect, this was merely the beginning**

अमरीका ने अपनी इस कार्रवाई के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ की अनुमति लेने या इस सिलसिले में अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की परवाह नहीं की। अमरीका पर आरोप लगा कि उसने अपने इस अभियान में कुछ नागरिक ठिकानों पर भी निशाना साधा जबकि इनका आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं था। पीछे मुड़कर अब देखने पर लगता है कि यह तो एक शुरुआत भर थी।

## 9/11 AND THE 'GLOBAL WAR ON TERROR' 9/11 और 'आतंकवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी युद्ध'

**On 11 September 2001, nineteen hijackers hailing from a number of Arab countries took control of four American commercial aircraft shortly after takeoff and flew them into important buildings in the US. One airliner each crashed into the North and South Towers of the World Trade Centre in New York. A third aircraft crashed into the Pentagon building in Arlington,**

11 सितंबर 2001 के दिन विभिन्न अरब देशों के 19 अपहरणकर्त्ताओं ने उड़ान भरने के चंद मिनटों बाद चार अमरीकी व्यावसायिक विमानों पर कब्ज़ा कर लिया। अपहरणकर्त्ता इन विमानों को अमरीका की महत्वपूर्ण इमारतों की सीध में उड़ाकर ले गये। दो विमान न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के उत्तरी और दक्षिणी टावर से टकराए। तीसरा विमान वर्जिनिया के अलिंगटन स्थित 'पेंटागन' से टकराया।

**Virginia, where the US Defence Department is headquartered. The fourth aircraft, presumably bound for the Capitol building of the US Congress, came down in a field in Pennsylvania. The attacks have come to be known as “9/11”. (In America the convention is to write the month first, followed by the date; hence the short form ‘9/ 11’ instead of ‘11/9’ as we would write in India).**

‘पेंटागन’ में अमरीकी रक्षा-विभाग का मुख्यालय है। चौथे विमान को अमरीकी कांग्रेस की मुख्य इमारत से टकराना था लेकिन वह पेन्सिलवेनिया के एक खेत में गिर गया। इस हमले को ‘नाइन एलेवन’ कहा जाता है (अमरीका में महीने को तारीख से पहले लिखने का चलन है। इसी का संक्षिप्त रूप 9/11 है न कि 11/9 जैसा कि भारत में लिखा जाएगा)।

**The attacks killed nearly three thousand persons. In terms of their shocking effect on Americans, they have been compared to the British burning of Washington, DC in 1814 and the Japanese attack on Pearl Harbour in 1941. However, in terms of loss of life, 9/11 was the most severe attack on US soil since the founding of the country in 1776.**

इस हमले में लगभग तीन हजार व्यक्ति मारे गये। अमरीकियों के लिए यह दिल दहला देने वाला अनुभव था। उन्होंने इस घटना की तुलना 1814 और 1941 की घटनाओं से की। 1814 में ब्रिटेन ने वाशिंगटन डीसी में आगजनी की थी और 1941 में जापानियों ने पर्ल हार्बर पर हमला किया था। जहां तक जान-माल की हानि का सवाल है तो अमरीकी जमीन पर यह अब तक का सबसे गंभीर हमला था। अमरीका 1776 में एक देश बना और तब से उसने इतना बड़ा हमला नहीं झेला था।

**The US response to 9/11 was swift and ferocious. Clinton had been succeeded in the US presidency by George W. Bush of the Republican Party, son of the earlier President George H. W. Bush. Unlike Clinton, Bush had a much harder view of US interests and of the means by which to advance them. As a part of its 'Global War on Terror', the US launched 'Operation Enduring Freedom'**

9/11 के ज़वाब में अमरीका ने फौरन कदम उठाये और भयंकर कार्रवाई की। अब क्लिंटन की जगह रिपब्लिकन पार्टी के जार्ज डब्ल्यू. बुश राष्ट्रपति थे। ये पूर्ववर्ती राष्ट्रपति एच. डब्ल्यू. बुश के पुत्र हैं। क्लिंटन के विपरीत बुश ने अमरीकी हितों को लेकर कठोर रवैया अपनाया और इन हितों को बढ़ावा देने के लिए कड़े कदम उठाये। 'आतंकवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी युद्ध' के अंग के रूप में अमरीका ने 'ऑपरेशन एन्डयूरिंग फ्रीडम' चलाया।



**against all those suspected to be behind this attack, mainly Al-Qaeda and the Taliban regime in Afghanistan. The Taliban regime was easily overthrown, but remnants of the Taliban and Al - Qaeda have remained potent, as is clear from the number of terrorist attacks launched by them against Western targets since.**

यह अभियान उन सभी के खिलाफ चला जिन पर 9/11 का शक था। इस अभियान में मुख्य निशाना अल-कायदा और अफगानिस्तान के तालिबान-शासन को बनाया गया। तालिबान के शासन के पाँच जल्दी ही उखड़ गए लेकिन तालिबान और अल-कायदा के अवशेष अब भी सक्रिय हैं। 9/11 की घटना के बाद से अब तक इनकी तरफ से पश्चिमी मुल्कों में कई जगहों पर हमले हुए हैं। इससे इनकी सक्रियता की बात स्पष्ट हो जाती है।

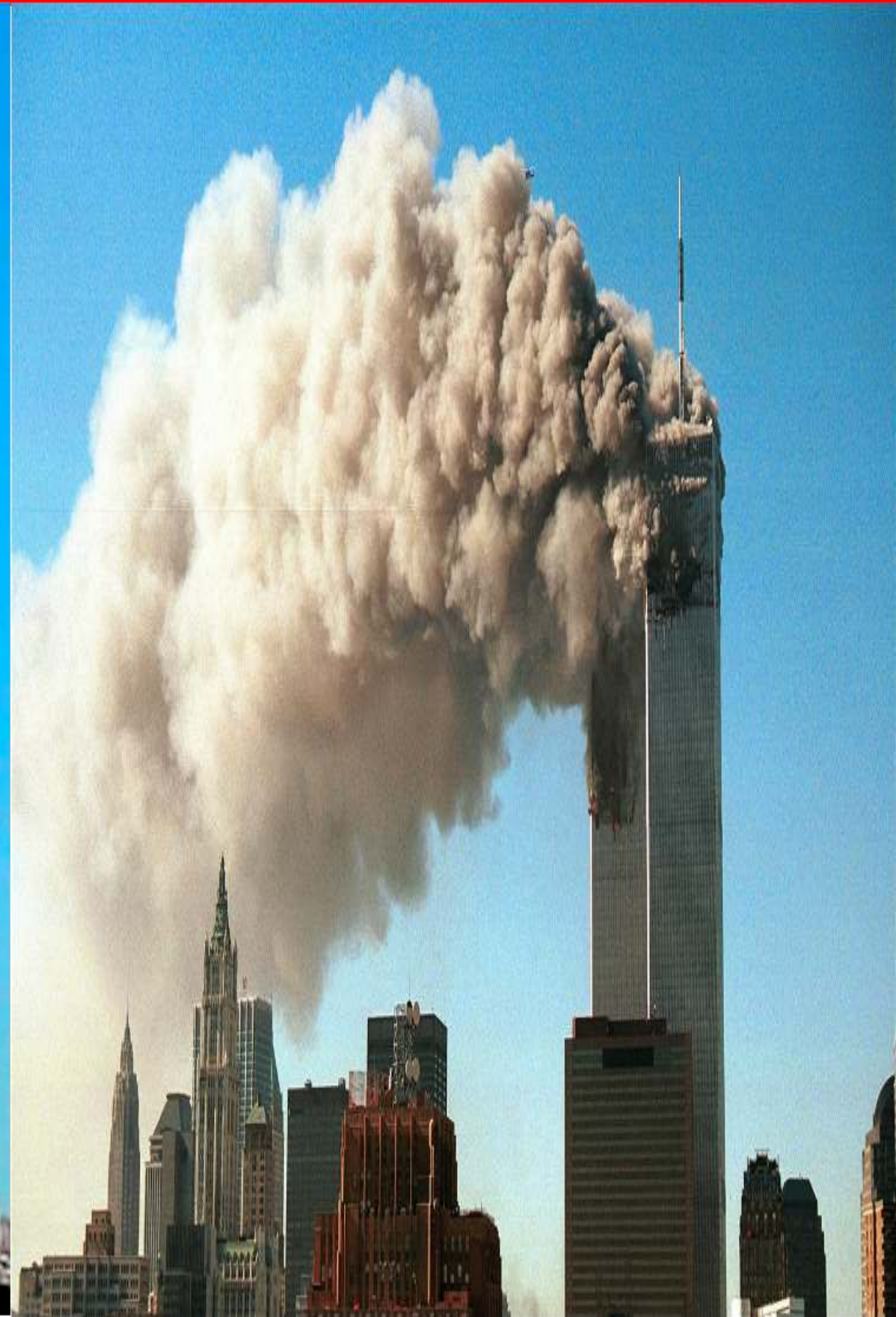
# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**The US forces made arrests all over the world, often without the knowledge of the government of the persons being arrested, transported these persons across countries and detained them in secret prisons. Some of them were brought to Guantanamo Bay, a US Naval base in Cuba, where the prisoners did not enjoy the protection of international law or the law of their own country or that of the US. Even the UN representatives were not allowed to meet these prisoners.**

अमरीकी सेना ने पूरे विश्व में गिरफ्तारियां कीं। अक्सर गिरफ्तार लोगों के बारे में उनकी सरकार को जानकारी नहीं दी गई। गिरफ्तार लोगों को अलग-अलग देशों में भेजा गया और उन्हें खुफिया जेलखानों में बंदी बनाकर रखा गया। क्यूबा के निकट अमरीकी नौसेना का एक ठिकाना ग्वांतानामो बे में है। कुछ बंदियों को वहां रखा गया। इस जगह रखे गए बंदियों को न तो अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की सुरक्षा प्राप्त है और न ही अपने देश या अमरीका के कानूनों की। संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधियों तक को इन बंदियों से मिलने की अनुमति नहीं दी गई।

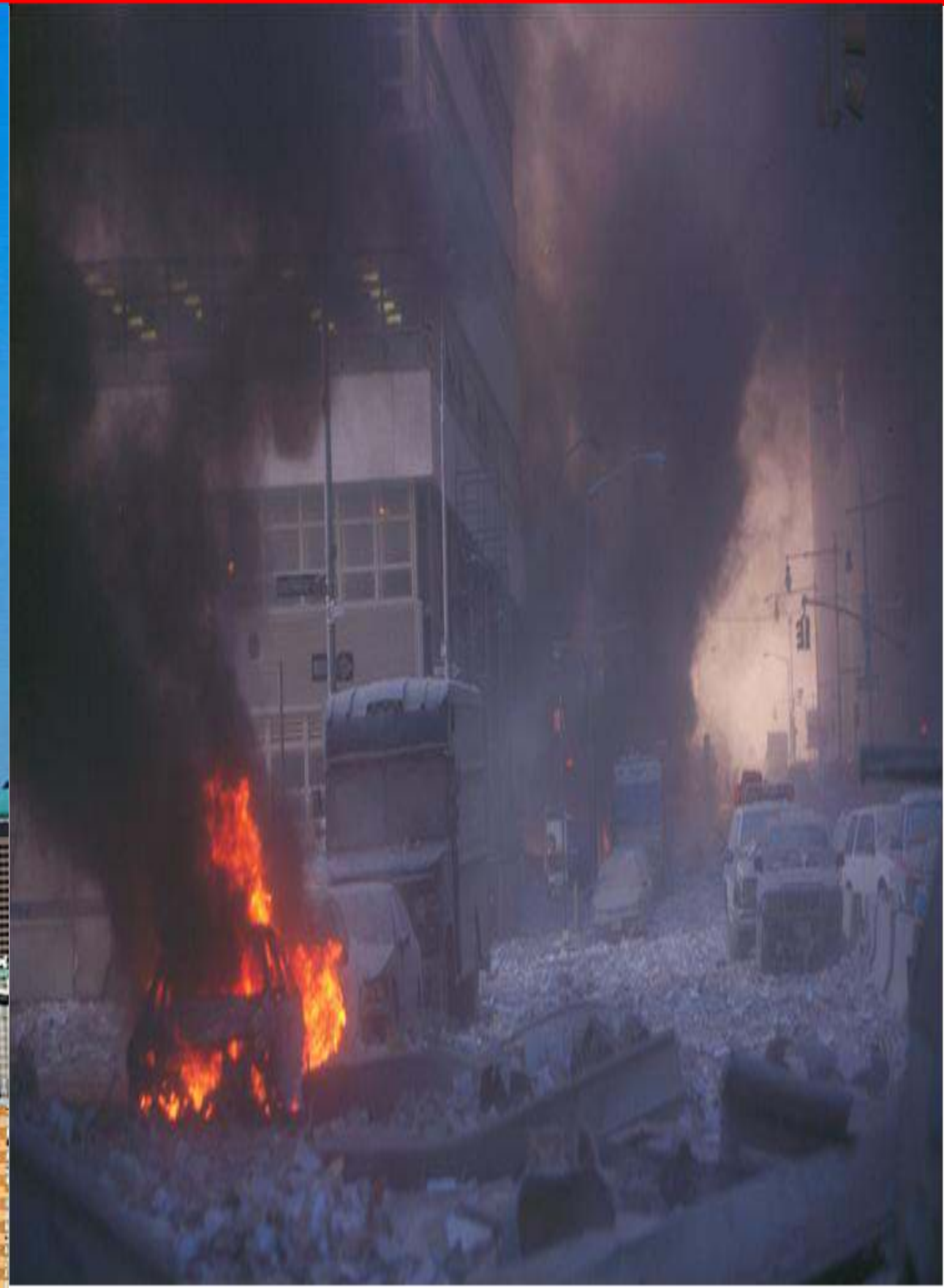


# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व



**2 May 2011**

**He was killed by U.S. A. Army**

## **THE IRAQ INVASION**

**On 19 March 2003, the US launched its invasion of Iraq under the codename**

**'Operation Iraqi Freedom'.**

**More than forty other countries joined in the US-led 'coalition of the willing' after the UN refused to give its mandate to the invasion. The ostensible purpose of the invasion was to prevent Iraq from developing weapons of mass destruction (WMD). Since no evidence of WMD has been unearthed in Iraq, it is speculated that the invasion was motivated by other objectives, such as controlling Iraqi oilfields and installing a regime friendly to the US.**

## **इराक पर आक्रमण**

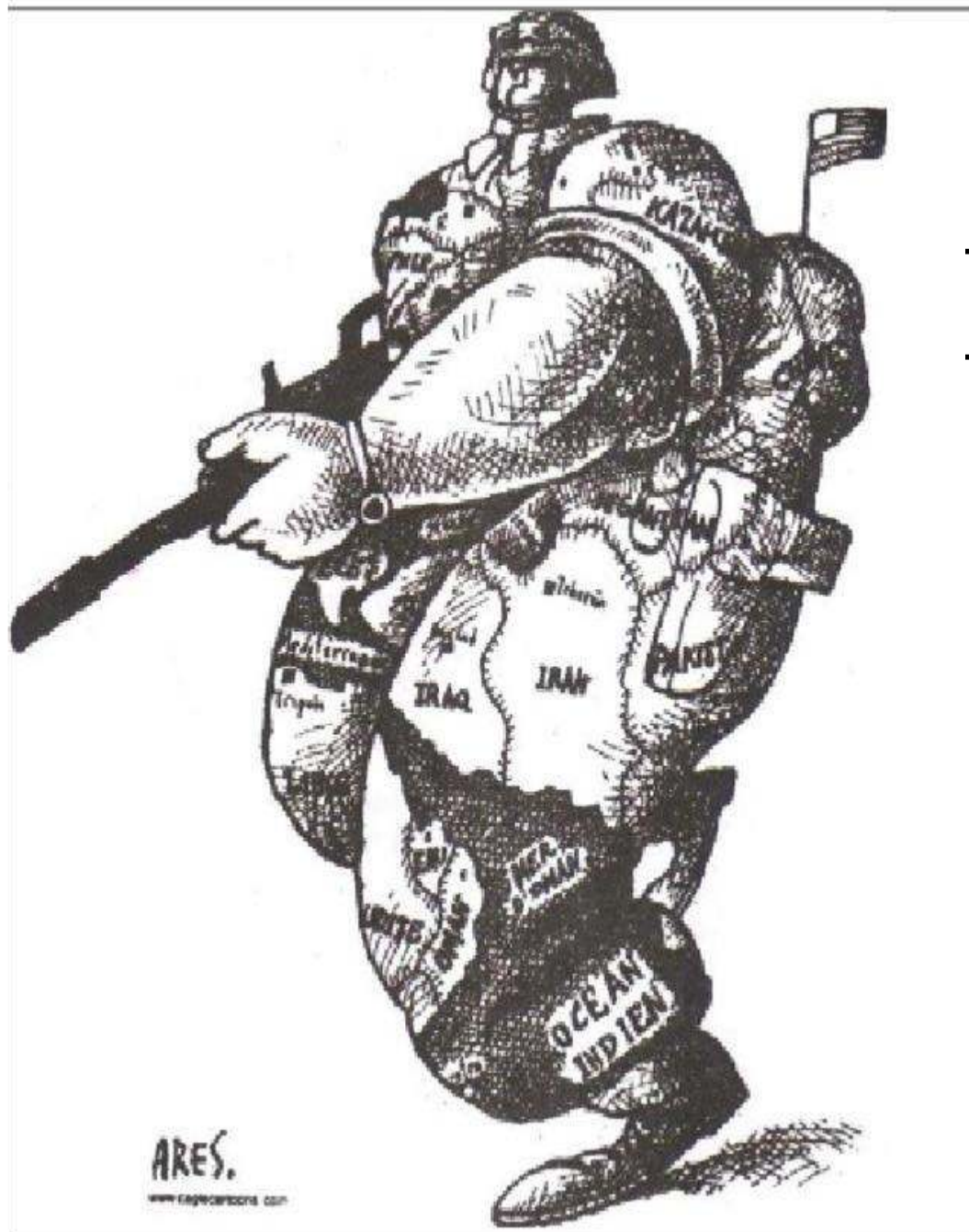
2003 के 19 मार्च को अमरीका ने 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' के कूटनाम से इराक पर सैन्य-हमला किया। अमरीकी अगुआई वाले 'कॉअलिशन ऑव वीलिंग्स (आकांक्षियों के महाजोट)' में 40 से ज्यादा देश शामिल हुए। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इराक पर इस हमले की अनुमति नहीं दी थी। दिखावे के लिए कहा गया कि सामूहिक संहार के हथियार (वीपंस ऑव मास डेस्ट्रक्शन) बनाने से रोकने के लिए इराक पर हमला किया गया है। इराक में सामूहिक संहार के हथियारों की मौजूदगी के कोई प्रमाण नहीं मिले। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हमले के मकसद कुछ और ही थे, जैसे इराक के तेल-भंडार पर नियंत्रण और इराक में अमरीका की मनपसंद सरकार कायम करना।



# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Although the government of Saddam Hussein fell swiftly, the US has not been able to 'pacify' Iraq. Instead, a full-fledged insurgency against US occupation was ignited in Iraq. While the US has lost over 3,000 military personnel in the war, Iraqi casualties are very much higher. It is conservatively estimated that 50,000 Iraqi civilians have been killed since the US-led invasion. It is now widely recognised that the US invasion of Iraq was, in some crucial respects, both a military and political failure.**

सदाम हुसैन की सरकार तो चंद रोज़ में ही जाती रही, लेकिन इराक को 'शांत' कर पाने में अमरीका सफल नहीं हो सका है। इराक में अमरीका के खिलाफ एक पूर्णव्यापी विद्रोह भड़क उठा। अमरीका के 3000 सैनिक इस युद्ध में मरे जबकि इराक के सैनिक कहीं ज्यादा बड़ी संख्या में मारे गये। एक अनुमान के अनुसार अमरीकी हमले के बाद से लगभग 50000 नागरिक मारे गये हैं। अब यह बात बड़े व्यापक रूप में मानी जा रही है कि एक महत्त्वपूर्ण अर्थ में इराक पर अमरीकी हमला सैन्य और राजनीतिक धरातल पर असफल सिद्ध हुआ है।



फौजी की वर्दी और दुनिया का नक्शा !  
यह कार्टून क्या बताता है?

**Soldier World Map © Ares, Cagle Cartoons Inc.**

### WHAT DOES HEGEMONY MEAN?

**It may be more appropriate to describe an international system with only one centre of power by the term 'hegemony'. We can identify three very different understandings of what hegemony is. Let us examine each of these meanings of hegemony and relate them to contemporary international politics.**

क्या होता है वर्चस्व का अर्थ?

जब अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था किसी एक महाशक्ति या कहें कि उद्धत महाशक्ति के दबदबे में हो तो बहुधा इसे 'एकध्वीय' व्यवस्था भी कहा जाता है। भौतिकी के शब्द 'ध्रुव' का यह एक तरह से भ्रामक प्रयोग है। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में ताकत का एक ही केंद्र हो तो इसे 'वर्चस्व' (भ्रमहमउवदल) शब्द के इस्तेमाल से वर्णित करना ज्यादा उचित होगा।

## HEGEMONY AS HARD POWER

**The bedrock of contemporary US power lies in the overwhelming superiority of its military power. American military dominance today is both absolute and relative. In absolute terms, the US today has military capabilities that can reach any point on the planet accurately, lethally and in real time, thereby crippling the adversary while its own forces are sheltered to the maximum extent possible from the dangers of war.**

वर्चस्व – सैन्य शक्ति के अर्थ में अमरीका की मौजूदा ताकत की रीढ़ उसकी बढ़ो-चढ़ी सैन्य शक्ति है। आज अमरीका की सैन्य शक्ति अपने आप में अनूठी है और बाकी देशों की तुलना में बेजोड़। अनूठी इस अर्थ में कि आज अमरीका अपनी सैन्य क्षमता के बूते पूरी दुनिया में कहीं भी निशाना साध सकता है। एकदम सही समय में अचूक और घातक वार करने की क्षमता है उसके पास। अपनी सेना को युद्धभूमि से अधिकतम दूरी पर सुरक्षित रखकर वह अपने दुश्मन को उसके घर में ही पंगु बना सकता है।

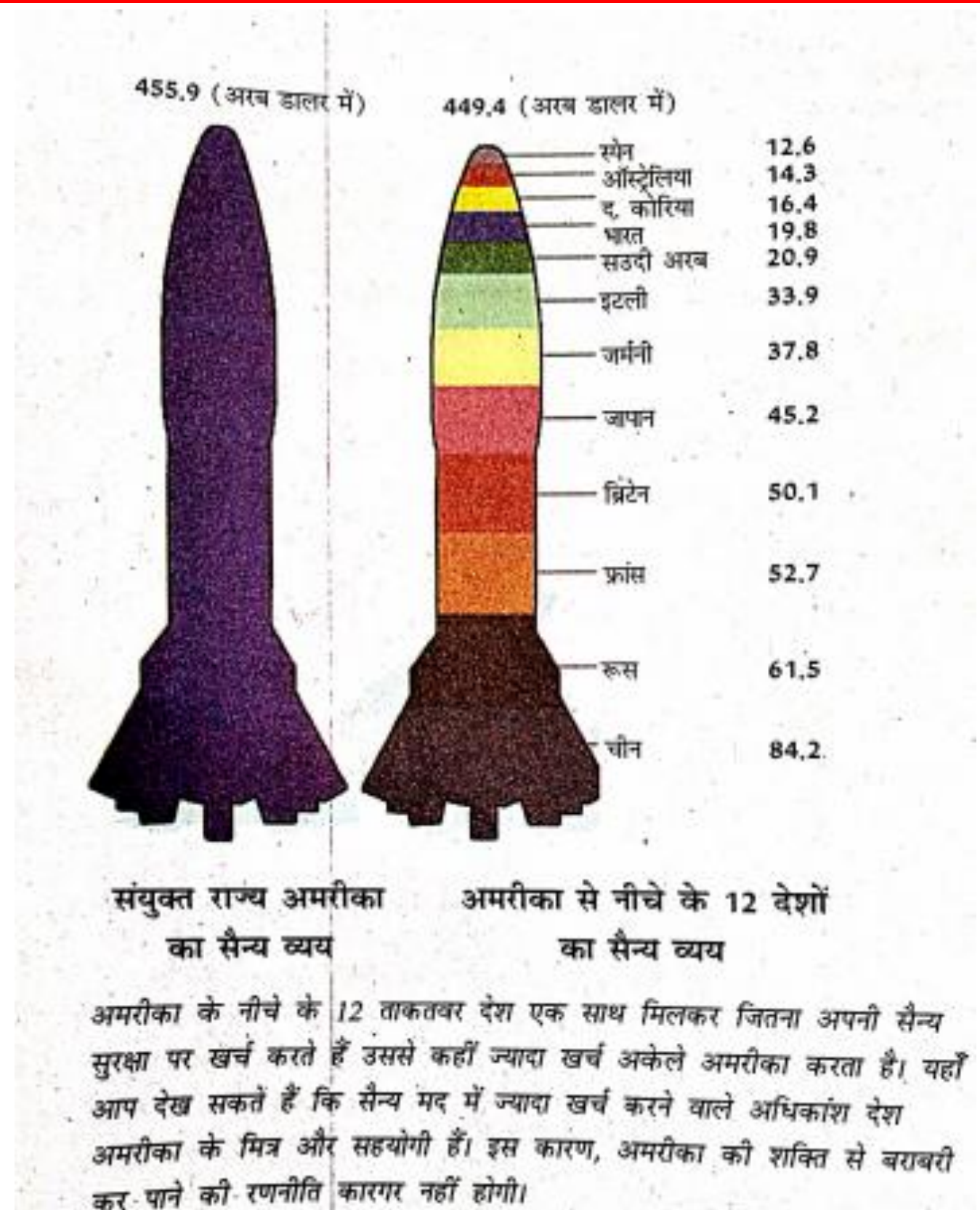
# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**But even more awesome than the absolute capabilities of the US is the fact that no other power today can remotely match them. The US today spends more on its military capability than the next 12 powers combined. Furthermore, a large chunk of the Pentagon's budget goes into military research and development, or, in other words, technology. Thus, the military dominance of the US is not just based on higher military spending, but on a qualitative gap, a technological chasm that no**

अमरीकी सैन्य शक्ति का यह अनूठापन अपनी जगह लेकिन इससे भी ज्यादा विस्मयकारी तथ्य यह है कि आज कोई भी देश अमरीकी सैन्य शक्ति की तुलना में उसके पासंग के बराबर भी नहीं है। अमरीका से नीचे के कुल 12 ताकतवर देश एक साथ मिलकर अपनी सैन्य क्षमता के लिए जितना खर्च करते हैं उससे कहीं ज्यादा अपनी सैन्य क्षमता के लिए अकेले अमरीका करता है। इसके अतिरिक्त, पेंटागन अपनी बजट का एक बड़ा हिस्सा रक्षा अनुसंधान और विकास के मद में अर्थात् प्रौद्योगिकी पर खर्च करता है। इस प्रकार अमरीका के सैन्य प्रभुत्व का आधार सिर्फ उच्च सैन्य व्यय नहीं बल्कि उसकी गुणात्मक बढ़त भी है। अमरीका आज सैन्य प्रौद्योगिकी के मामले में इतना आगे है कि किसी और देश के लिए इस मामले में उसकी बराबरी कर पाना संभव नहीं है।



# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व



# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

## HEGEMONY AS STRUCTURAL POWER

**The second notion of hegemony is very different from the first. It emerges from a particular understanding of the world economy. The basic idea is that an open world economy requires a hegemon or dominant power to support its creation and existence. The hegemon must possess both the ability and the desire to establish certain norms for order and must sustain the global structure. The hegemon usually does this to its own advantage but often to its relative detriment, as its competitors take advantage of the openness of the world economy without paying the costs of maintaining its**

**वर्चस्व – ढाँचागत ताकत के अर्थ में**  
वर्चस्व का दूसरा अर्थ पहले अर्थ से बहुत अलग है। इसका रिश्ता वैश्विक अर्थव्यवस्था की एक खास समझ से है। इस समझ की बुनियादी धारणा है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी मर्जी चलाने वाला एक ऐसा देश ज़रूरी होता है जो अपने मतलब की चीजों को बनाए और बरकरार रखे। ऐसे देश के लिए ज़रूरी है कि उसके पास व्यवस्था कायम करने के लिए कायदों को लागू करने की क्षमता और इच्छा हो। साथ ही ज़रूरी है कि वह वैश्विक व्यवस्था को हर हालत में बनाए रखे। दबदबे वाला देश ऐसा अपने फायदे के लिए करता है लेकिन अक्सर इसमें उसे कुछ आपेक्षिक हानि उठानी पड़ती है। दूसरे प्रतियोगी देश वैश्विक अर्थव्यवस्था के खुलेपन का फायदा उठाते हैं जबकि इस खुलेपन को कायम रखने के लिए उन्हें कोई खर्च भी नहीं करना पड़ता।

# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Hegemony in this second sense is reflected in the role played by the US in providing global public goods. By public goods we mean those goods that can be consumed by one person without reducing the amount of the good available for someone else. Fresh air and roads are examples of public goods. In the context of the world economy, the best examples of a global public good are sea-lanes of communication (SLOCs), the sea routes commonly used by merchant ships. Free trade in an open world economy would not be possible without open SLOCs.**

वर्चस्व के इस दूसरे अर्थ को ग्रहण करें तो इसकी झलक हमें विश्वव्यापी 'सार्वजनिक वस्तुओं' को मुहैया कराने की अमरीकी भूमिका में मिलती है। 'सार्वजनिक वस्तुओं' से आशय ऐसी चीजों से है जिसका उपभोग कोई एक व्यक्ति करे तो दूसरे को उपलब्ध इसी वस्तु की मात्रा में कोई कमी नहीं आए। स्वच्छ वायु और सड़क सार्वजनिक वस्तु के उदाहरण हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सार्वजनिक वस्तु का सबसे बढ़िया उदाहरण समुद्री व्यापार-मार्ग (सी लेन ऑव कम्युनिकेशन्स – **SLOCs**) हैं जिनका इस्तेमाल व्यापारिक जहाज करते हैं। खुली वैश्विक अर्थव्यवस्था में मुक्त-व्यापार समुद्री व्यापार-मार्गों के खुलेपन के बिना संभव नहीं।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**It is the naval power of the hegemon that underwrites the law of the sea and ensures freedom of navigation in international waters. Since the decline of British naval power after the Second World War, the multi-oceanic US Navy has played this role.**

दबदबे वाला देश अपनी नौसेना की ताकत से समुद्री व्यापार-मार्गों पर आवाजाही के नियम तय करता है और अंतर्राष्ट्रीय समुद्र में अबाध आवाजाही को सुनिश्चित करता है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटिश नौसेना का जोर घट गया। अब यह भूमिका अमरीकी नौसेना निभाती है जिसकी उपस्थिति दुनिया के लगभग सभी महासागरों में है।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Another example of a global public good is the Internet. Although it is seen today as making the virtual world of the World Wide Web possible, we should not forget that the Internet is the direct outcome of a US military research project that began in 1950. Even today, the Internet relies on a global network of satellites, most of which are owned by the US government.**

वैश्विक सार्वजनिक वस्तु का एक और उदाहरण है – इंटरनेट। हालाँकि आज इंटरनेट के जरिए वर्ल्ड वाइड वेब (जगत-जोड़ता- जाल) का आभासी संसार साकार हो गया दीखता है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इंटरनेट अमरीकी सैन्य अनुसंधान परियोजना का परिणाम है। यह परियोजना 1950 में शुरू हुई थी। आज भी इंटरनेट उपग्रहों के एक वैश्विक तंत्र पर निर्भर है और इनमें से अधिकांश उपग्रह अमरीका के हैं।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**It is important to remember that the economic preponderance of the US is inseparable from its structural power, which is the power to shape the global economy in a particular way. After all, the Bretton Woods system, set up by the US after the Second World War, still constitutes the basic structure of the world economy. Thus, we can regard the World Bank, International Monetary Fund (IMF) and World Trade Organisation (WTO) as the products of American hegemony.**

ध्यान रहे कि अमरीका की आर्थिक प्रबलता उसकी ढाँचागत ताकत यानी वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक खास शकल में ढालन की ताकत से जुड़ी हुई है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ब्रेटनवुड प्रणाली कायम हुई थी। अमरीका द्वारा कायम यह प्रणाली आज भी विश्व की अर्थव्यवस्था की बुनियादी संरचना का काम कर रही है। इस तरह हम विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन को अमरीकी वर्चस्व का परिणाम मान सकते हैं।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**A classic example of the structural power of the US is the academic degree called the Master's in Business Administration (MBA). The idea that business is a profession that depends upon skills that can be taught in a university is uniquely American. The first business school in the world, the Wharton School at the University of Pennsylvania, was established in 1881. The first MBA courses were initiated around 1900. The first MBA course outside the US was established only in 1950. Today, there is no country in the world in which the MBA is not a prestigious academic**

अमरीका की ढाँचागत ताकत का एक मानक उदाहरण एमबीए (मास्टर ऑव बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) की अकादमिक डिग्री है। यह विशुद्ध रूप से अमरीकी धारणा है कि व्यवसाय अपने आप में एक पेशा है जो कौशल पर निर्भर करता है और इस कौशल को विश्वविद्यालय में अर्जित किया जा सकता है। यूनिवर्सिटी ऑव पेन्सिलवेनिया में वाहर्टन स्कूल के नाम से विश्व का पहला 'बिजनेस स्कूल' खुला। इसकी स्थापना सन् 1881 में हुई। एमबीए के शुरूआती पाठ्यक्रम 1900 से आरंभ हुए। अमरीका से बाहर एमबीए के किसी पाठ्यक्रम की शुरूआत सन् 1950 में ही जाकर हो सकी। आज दुनिया में कोई देश ऐसा नहीं जिसमें एमबीए को एक प्रतिष्ठित अकादमिक डिग्री का दर्जा हासिल न हो।

# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

## HEGEMONY AS SOFT POWER

**It would however be a mistake to see US hegemony in purely military and economic terms without considering the ideological or the cultural dimension of US hegemony. This third sense of hegemony is about the capacity to 'manufacture consent'. Here, hegemony implies class ascendancy in the social, political and particularly ideological spheres. Hegemony arises when the dominant class or country can win the consent of dominated classes, by persuading the dominated classes to view the world in a manner favourable to the ascendancy of the dominant**

**वर्चस्व – सांस्कृतिक अर्थ में**

अमरीकी वर्चस्व को शुद्ध रूप से सैन्य और आर्थिक संदर्भ में देखना भूल होगी। हमें अमरीकी वर्चस्व पर विचारधारा या संस्कृति के संदर्भ में भी विचार करना चाहिए। वर्चस्व के इस तीसरे अर्थ का रिश्ता 'सहमति गढ़ने' की ताकत से है। यहाँ वर्चस्व का आशय है सामाजिक, राजनीतिक और खासकर विचारधारा के धरातल पर किसी वर्ग की बढ़त या दबदबा। कोई प्रभुत्वशाली वर्ग या देश अपने असर में रहने वालों को इस तरह सहमत कर सकता है कि वे भी दुनिया को उसी नज़रिए से देखने लगे जिसमें प्रभुत्वशाली वर्ग या देश देखता है। इससे प्रभुत्वशाली की बढ़त और वर्चस्व कायम होता है।



# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Adapted to the field of world politics, this notion of hegemony suggests that a dominant power deploys not only military power but also ideological resources to shape the behaviour of competing and lesser powers. The behaviour of the weaker countries is influenced in ways that favour the interests of the most powerful country, in particular its desire to remain preeminent. Consent, in other words, goes hand-in-hand with, and is often more effective than, coercion.**

विश्व राजनीति के दायरे में वर्चस्व के इस अर्थ को लागू करें तो स्पष्ट होगा कि प्रभुत्वशाली देश सिर्फ सैन्य शक्ति से काम नहीं लेता; वह अपने प्रतिद्वंद्वी और अपने से कमजोर देशों के व्यवहार-बरताव को अपने मनमाफिक बनाने के लिए विचारधारा से जुड़े साधनों का भी इस्तेमाल करता है। कमजोर देशों के व्यवहार-बरताव को इस तरह से प्रभावित किया जाता है कि उससे सबसे ताकतवर देश का हितसाधन हो; उसका प्राबल्य बना रहे। इस तरह, प्रभुत्वशाली देश ज़ोर-जबर्दस्ती और रजामंदी दोनों ही तरीकों से काम लेता है। अक्सर रजामंदी का तरीका ज़ोर-जबर्दस्ती से कहीं ज्यादा कारगर साबित होता है।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**The predominance of the US in the world today is based not only on its military power and economic prowess, but also on its cultural presence. Whether we choose to recognise the fact or not, all ideas of the good life and personal success, most of the dreams of individuals and societies across the globe, are dreams**

आज विश्व में अमरीका का दबदबा सिर्फ सैन्य शक्ति और आर्थिक बढ़त के बूते ही नहीं बल्कि अमरीका की सांस्कृतिक मौजूदगी भी इसका एक कारण है। चाहे हम इस बात को मानें या न मानें लेकिन यह सच है कि आज अच्छे जीवन और व्यक्तिगत सफलता के बारे में जो धारणाएँ पूरे विश्व में प्रचलित हैं; दुनिया के अधिकांश लोगों और समाजों के जो सपने हैं—

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**churned out by practices prevailing in twentieth-century America. America is the most seductive, and in this sense the most powerful, culture on earth. This attribute is called 'soft power': the ability to persuade rather than coerce. Over time we get so used to hegemony that we hardly notice it, any more than we notice the rivers, birds, and trees around us.**

वे सब बीसवीं सदी के अमरीका में प्रचलित व्यवहार-बरताव के ही प्रतिबिंब हैं। अमरीकी संस्कृति बड़ी लुभावनी है और इसी कारण सबसे ज्यादा ताकतवर है। वर्चस्व का यह सांस्कृतिक पहलू है जहां ज़ोर-जबर्दस्ती से नहीं बल्कि रजामंदी से बात मनवायी जाती है। समय गुज़रने के साथ हम उसके इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि अब हम इसे इतना ही सहज मानते हैं जितना अपने आस-पास के पेड़-पक्षी या नदी को।



# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





## INDIA'S RELATIONSHIP WITH THE US

**During the Cold War years, India found itself on the opposite side of the divide from the US. India's closest friendship during those years was with the Soviet Union. After the collapse of the Soviet Union, India suddenly found itself friendless in an increasingly hostile international environment. However, these were also the years when India decided to liberalise its economy and integrate it with the global economy. This policy and India's impressive economic growth rates in recent years have made the country an attractive economic partner for a number of countries including**

अमरीका से भारत के संबंध

शीतयुद्ध के वर्षों में भारत अमरीकी गुट के विरुद्ध खड़ा था। इन सालों में भारत की करीबी दोस्ती सोवियत संघ से थी। सोवियत संघ के बिखरने के बाद भारत ने पाया कि लगातार कटुतापूर्ण होते अंतर्राष्ट्रीय माहौल में वह मित्रविहीन हो गया है। इसी अवधि में भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण करने तथा उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ने का भी फैसला किया। इस नीति और हाल के सालों में प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि-दर के कारण भारत अब अमरीका समेत कई देशों के लिए आकर्षक आर्थिक सहयोगी बन गया है।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**It is important that we do not lose sight of the fact that two new factors have emerged in Indo-US relations in recent years. These factors relate to the technological dimension and the role of the Indian-American diaspora. Indeed, these two factors are interrelated. Consider the following facts:**

हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि हाल के सालों में भारत-अमरीकी संबंधों के बीच दो नई बातें उभरी हैं। इन बातों का संबंध प्रौद्योगिकी और अमरीका में बसे अनिवासी भारतीयों से है। दरअसल, ये दोनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। निम्नलिखित तथ्यों पर विचार कीजिए

—

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

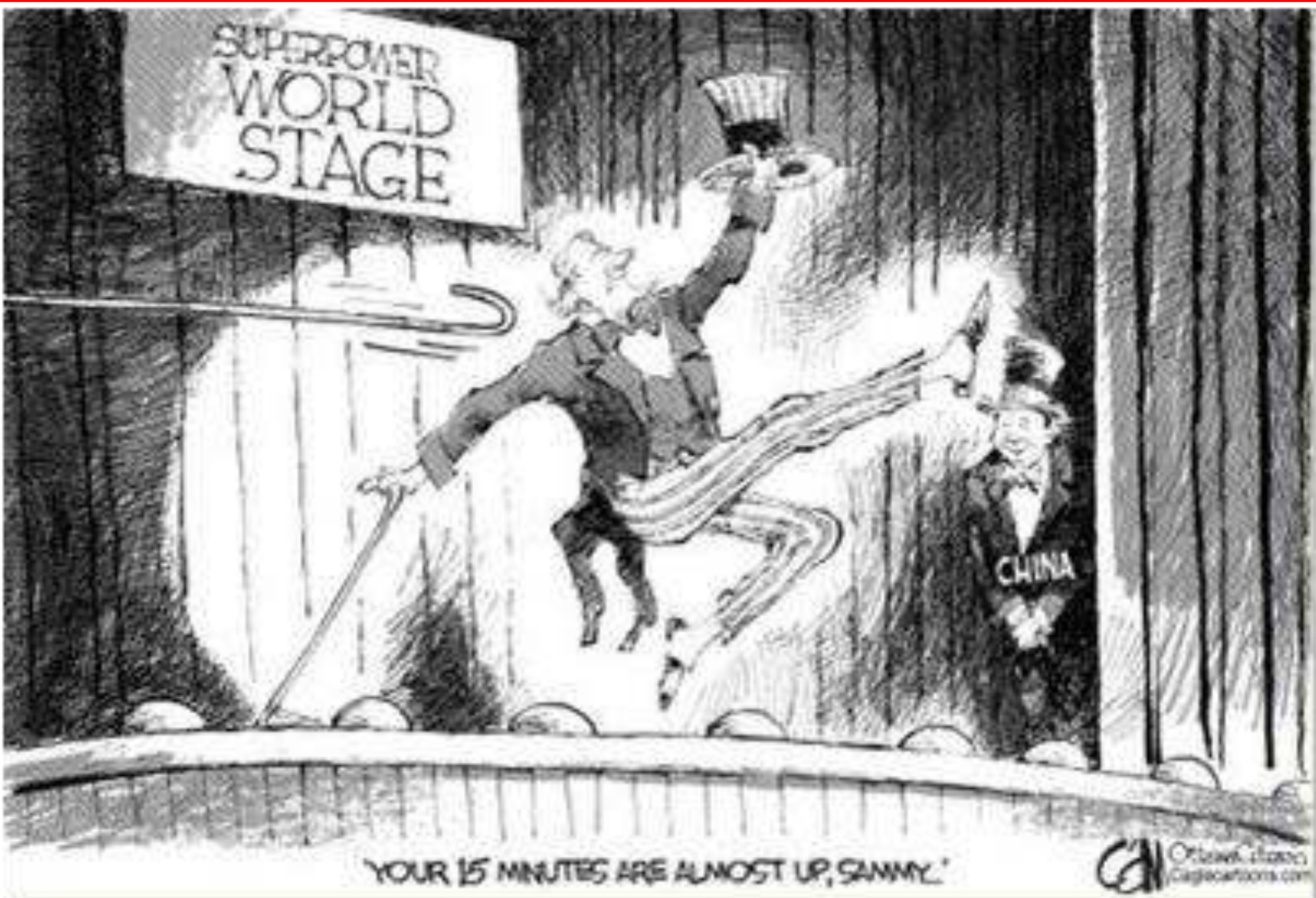
- **The US absorbs about 65 per cent of India's total exports in the software sector.**
- **35 per cent of the technical staff of Boeing is estimated to be of Indian origin.**
- **300,000 Indians work in Silicon Valley.**
- **15 percent of all high-tech start-ups are by Indian Americans.**
- सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भारत के कुल निर्यात का 65 प्रतिशत अमरीका को जाता है।
- बोइंग के 35 प्रतिशत तकनीकी कर्मचारी भारतीय मूल के हैं।
- 3 लाख भारतीय 'सिलिकन वैली' में काम करते हैं।
- उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की 15 प्रतिशत कंपनियों की शुरुआत अमरीका में बसे भारतीयों ने की है।



# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व



# US Hegemony in World Politics समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व





## HOW CAN HEGEMONY BE OVERCOME?

**How long will hegemony last? How do we get beyond hegemony? These become, for obvious reasons, some of the burning questions of our time. History provides us with some fascinating clues to answer these questions. But what about the present and the future? In international politics, very few factors formally curtail the exercise of military power by any country. There is no world government like the government of a country.**

## वर्चस्व से कैसे निपटें?

कब तक चलेगा अमरीकी वर्चस्व? इस वर्चस्व से कैसे बचा जा सकता है? ज़ाहिरा तौर पर ये सवाल हमारे वक्त के सबसे झंझावाती सवाल हैं। इतिहास से हमें इन सवालों के जवाब के कुछ सुराग मिलते हैं। लेकिन बात यहां इतिहास की नहीं वर्तमान और भविष्य की हो रही है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में ऐसी चीज़ें गिनी-चुनी ही हैं जो किसी देश की सैन्यशक्ति पर लगाम कस सकें। हर देश में सरकार होती है लेकिन विश्व-सरकार जैसी कोई चीज नहीं होती

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**As we shall see in Chapter 6, international organisation is not world government. Thus, international politics is 'politics without government'. There are some rules and norms called the laws of war that restrict, but do not prohibit, war. But few states will entrust their security to international law alone. Does this mean that there is no escape from war and hegemony?**

अध्याय-6 में यह बात स्पष्ट होगी कि अंतर्राष्ट्रीय संगठन विश्व-सरकार नहीं हैं। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति दरअसल 'सरकार विहीन राजनीति' है। कुछ कायदे-कानून जरूर हैं जो युद्ध पर कुछ अंकुश रखते हैं लेकिन ये कायदे-कानून युद्ध को रोक नहीं सकते। फिर, शायद ही कोई देश होगा जो अपनी सुरक्षा को अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के हवाले कर दे। तो क्या इन बातों से यह समझा जाए कि न तो वर्चस्व से कोई छुटकारा है और न ही युद्ध से?



# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**In the short term, we must recognise that no single power is anywhere near balancing the US militarily. A military coalition against the US is even less likely given the differences that exist among big countries like China, India, and Russia that have the potential to challenge US hegemony.**

फिलहाल हमें यह बात मान लेनी चाहिए कि कोई भी देश अमरीकी सैन्यशक्ति के जोड़ का मौजूद नहीं है। भारत, चीन और रूस जैसे बड़े देशों में अमरीकी वर्चस्व को चुनौती दे पाने की संभावना है लेकिन इन देशों के बीच आपसी विभेद हैं और इन विभेदों के रहते अमरीका के विरुद्ध इनका कोई गठबंधन नहीं हो सकता।

# **US Hegemony in World Politics** समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व

**Some people argue that it is strategically more prudent to take advantage of the opportunities that hegemony creates. For instance, raising economic growth rates requires increased trade, technology transfers, and investment, which are best acquired by working with rather than against the hegemon. Thus, it is suggested that instead of engaging in activities opposed to the hegemonic power, it may be advisable to extract benefits by operating within the hegemonic system. This is called the 'bandwagon'**

कुछ लोगों का तर्क है कि वर्चस्वजनित अवसरों के लाभ उठाने की रणनीति ज्यादा संगत है। उदाहरण के लिए, आर्थिक वृद्धि-दर को ऊँचा करने के लिए व्यापार को बढ़ावा प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण और निवेश ज़रूरी है और अमरीका के साथ मिलकर काम करने से इसमें आसानी होगी न कि उसका विरोध करने से। ऐसे में सुझाव दिया जाता है कि सबसे ताकतवर देश के विरुद्ध जाने के बजाय उसके वर्चस्व-तंत्र में रहते हुए अवसरों का फायदा उठाना कहीं उचित रणनीति है। इसे 'बैंडवैगन' अथवा 'जैसी बहे बयार पीठ तैसी कीजै' की रणनीति कहते हैं।